BA(Hons.) PART –I , Paper- II

डॉ0 गौतम कुमार

अतिथि शिक्षक

राजनीति विज्ञान विभाग

आचार्य नरेन्द्र देव महाविद्यालय, शाहपुर पटोरी, समस्तीपुर

कौटिल्य के मण्डल सिद्वांत

कौटिल्य के मंडल सिद्वान्त – कौटिल्य ने दूसरे राज्यों के साथ व्यवहार संबंध में दो सिद्वान्तों का विवेचन किया है। पड़ोसी राज्यों के साथ संबंध स्थापित करने के लिए "मण्डल सिद्वांत" का प्रतिपादन किया है। कौटिल्य के अनुसार, अन्तर्राज्यीय संबंधों का निर्धारण "मण्डल सिद्वान्त" के आधार पर किया जाना चाहिए। यह मण्डल सिद्वान्त बारह राज्यों के वृत्त पर आधारित है। इस वृत्त में कौटिल्य ने 12 राज्यों को शामिल किया है। इस प्रकार इसे राज्य मण्डल भी कहा जाता है। इस वृत्त के केन्द्र में राजा होता है, जो अपने पड़ोसी राज्यों को जीतकर अपने राज्य में मिलाने का प्रयास करता है, क्योंकि मानवीय स्वभाव के अनुसार प्रत्येक राजा राज्य विस्तार को अपनाता है। कौटिल्य द्वारा प्रतिपादित मण्डल सिद्वान्त आंशिक रूप में ठीक है।

मण्डल में बारह राज्यों का उल्लेख इस प्रकार है –

1. विजिगीषु – वजिगीषु का स्थान मण्डल के बीच में होता है और वह अपने राज्य के विस्तार की आकांक्षा रखता है।

2. **अरि** विजिगीषु के सामने वाला राज्य उसका शत्रु होता है।

3. **मित्र** अरि के सामने वाला राज्य मित्र अरि का शत्रु और विजिगीषु का मित्र होता है।

4. **अरि–मित्र** मित्र के सामने वाला राज्य अरि–मित्र होगा, वह अरि का मित्र और विजिगीषु का शत्रु होगा।

5. **मित्र–मित्र** अरिमित्र के सामने होने के कारण ये उसका शत्रु होगा, पर मित्र राज्य का मित्र होने के कारण ये राज्य विजिगीषु का मित्र होगा।

6. **अरिमित्र–मित्र** – अरिमित्र–मित्र राज्य अरिमित्र राज्य का मित्र राज्य होता है। अतः वह विजीगीषु का शत्रु राज्य होता है।

7 पार्ष्णिग्राह(पीठ का शत्रु) यह विजिगीषु के पीछे का राज्य होगा। अरि की तरह वह भी विजिगीषु का शत्रु होता है।

8. आक्रन्द(पीठ का मित्र) ये पार्ष्णिग्राह के पीछे का राज्य होगा, जो विजिगीषु का मित्र होगा।
9. पार्ष्णिग्राहासार ये राज्य आक्रन्द के पीछे होगा, ये राज्य पार्ष्णिग्राह का मित्र होता है।
10. आक्रन्दा सार(आक्रान्द का मित्र) पार्ष्णिग्राहासार के पीछे होगा और आक्रन्द का मित्र होता है।
11. मध्यम – मध्यम राज्य ऐसा राज्य होता है जो विजीगीषु और अरि दोनों ही प्रकार के राज्यों के सीमाओं से पृथक् राज्य होता है तथा दोनों से अधिक शक्तिशाली होता है। आवश्यकता पड़ने पर वह दोनों में से किसी की भी सहायता कर सकता है या दोनों का मुकाबला भी कर सकता है।
12. उदासीन – उदासीन राज्य का प्रदेश विजीगीषु, अरि एवं मध्यम राज्य की सीमाओं से पृथक होता है। वह अति शक्ति–सम्पन्न होता है और अपनी इच्छानुसार इन तीनों में से किसी की भी आवश्यकता होने पर सहायता कर सकता है।

कौटिल्य के मण्डल सिद्वान्त को इस चार्ट के माध्यम से भी समझा जा सकता है।

राज्य मण्डल

<table>
<tr><td rowspan="2">10. आक्रंदासार(आक्रन्द का मित्र)</td><td rowspan="2">9. पार्ष्णिग्राहासार(पीठ के शत्रु का मित्र)</td><td rowspan="2">8. आक्रद (पीठ का मित्र)</td><td rowspan="2">7. पार्ष्णिग्रहासार(पीठ का शत्रु)</td><td colspan="2">11. मध्यम</td><td rowspan="2">3. मित्र</td><td rowspan="2">4. अरि मित्र</td><td colspan="2">12.उदासीन</td></tr>
<tr><td>1. विजिगीषु</td><td>2. अरि</td><td>5. मित्र – मित्र</td><td>6. अरिमित्र –मित्र</td></tr>
</table>